SONAM BALA
(DEPT. OF GEOGRAPHY)
A.N.D. COLLEGE, SHAHPUR PATORY, SAMASTIPUR

26th APRIL 2020
SUNDAY

FOR B.A. – II (Hons)
PAPER – III, GEOGRAPHY OF INDIA & BIHAR

LECTURE – 24

UNIT – I

STRUCTURE OF INDIA
भारत की संरचना

उच्चावच के अंतर्गत हम पृथ्वी की सतह के ऊपर पर्वत, पठार, मैदान, झील आदि का अध्ययन करते हैं जबकि भूगर्भिक संरचना के अंतर्गत हम पृथ्वी की सतह के नीचे पाए जाने वाले चट्टानों का अध्ययन करते हैं तथा वे किस युग के हैं, कितने नवीन तथा पुराने हैं इसका भी अध्ययन किया जाता है। भारत को भूगर्भिक संरचना की दृष्टि से 4 भागों में बाँटा गया है जो निम्न है—

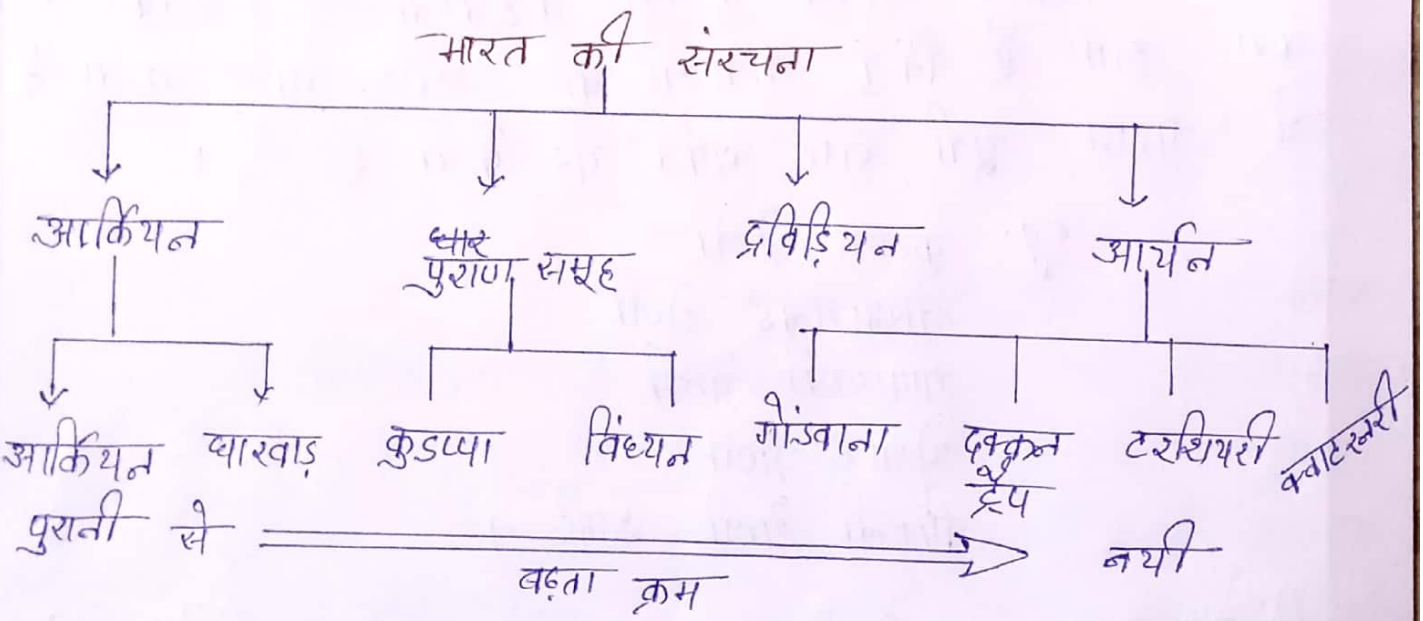

आर्कियन क्रम → सर्वप्रथम पृथ्वी के ठंडे होने से निर्मित प्राचीनतम चट्टान आर्कियन है। अत्यधिक रूपांतरण के कारण उनका मूल रूप नष्ट हो चुका है। इन चट्टानों में जीवाश्म का अभाव पाया जाता है। इसके अंतर्गत नीस एवं शिष्ट चट्टानें आती हैं। महान हिमालय के गर्भ में शीर्ष

Scanned by CamScanner

की हड्डी के समान ये चट्टाने फैली हुई हैं। ②

eg:— बुंदेलखंड नीस
बेलारी नीस

बुंदेलखंड नीस सर्वाधिक पुराना तथा पहला चट्टान है।

धारवाड़ क्रम → आर्कियन चट्टान के अपरदन एवं निक्षेपण के फलस्वरूप निर्मित चट्टान है। इसमें जीवाश्म का अभाव पाया जाता है, इसका विस्तार प्राय: द्वीप वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। विश्व का सर्वाधिक पुराना वलित पर्वत अरावली निर्माण इस काल में हुआ है।

धारवाड़ चट्टाने आर्थिक दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं, देश की सभी धात्विक व खनिज इसी चट्टान में पाए जाते हैं। eg.— अरावली

कुडप्पा क्रम → धारवाड़ चट्टानों के अपरदन एवं निक्षेपण से निर्मित चट्टानें कुडप्पा कहलाती हैं। इनका रूपांतरण कम हुआ है किंतु जीवाश्म का अभाव पाया जाता है। ये चट्टानें पूर्वी घाट पर्वत पर फैली हुई हैं।

eg. कृष्णा श्रेणी
नल्लामलई श्रेणी
पापाघनी श्रेणी
चेयार श्रेणी
दिल्ली श्रेणी आदि।

विंध्यन क्रम → छिछले सागर और नदी घाटियों में अवसाद के निक्षेपण से निर्मित चट्टानें इसके अंतर्गत आती हैं, इसमें जीवाश्म के प्रमाण पाए जाते हैं। यह संरचना चितौड़गढ़ (राजस्थान) से लेकर सासाराम (बिहार) तक फैली हुई है। अन्य क्षेत्रों में इसका विस्तार अग्रलिखित जगहों पर है —

Scanned by CamScanner

eg. सेमरिस श्रेणी
करनुल श्रेणी
मालवा बुंदेलखंड श्रेणी
पालनी श्रेणी आदि

विंध्यन क्रम की चट्टानें भवन निर्माण हेतु अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं, जैसे — लाल किला
जामा मस्जिद
साँची स्तूप

इस संरचना में पन्ना (मध्यप्रदेश), गोलकुंडा (आंध्र प्रदेश) जैसे हीरे के खान पाए जाते हैं।

गोंडवाना क्रम → कार्बोनिफेरस से जुरासिक काल तक के परतदार चट्टान इसके अंतर्गत आते हैं, इसमें जीवाश्म के प्रमाण पाए जाए हैं। भारत का 98% कोयला इसी संरचना में पाया जाता है, इसे दो भाग में बाँटते हैं —

(i) निचली गोंडवाना — तालचेर, दामोदर, पंचेत
(ii) ऊपरी गोंडवाना — महादीप, राजमहल, जबलपुर, उमिया श्रेणी।

दक्कन ट्रैप → इसका निर्माण मेसोजोइक युग के अंतिम काल क्रिटैशियस में ज्वालामुखी क्रिया के परिणामस्वरूप पाया जाता है। लावा के प्रवाह के कारण सीढ़ीनुमा आकृति वाली स्थलाकृति को ट्रैप कहते हैं। दक्कन ट्रैप के उ०-प० भाग में लावा की मोटाई 2-2000m और द०-पू० की ओर 15 m तक पाया जाता है।

इस चट्टान के विखंडन के फलस्वरूप काली या मिट्टी का निर्माण हुआ है जिसे कपासी या रेगुर मिट्टी कहते हैं।

टरशियरी क्रम → इसका निर्माण इयोसीन एवं प्लायोसीन के बीच हुआ है जैसे — रानीकोट एवं किरथर श्रेणी, नारी, गज एवं मुरी क्रम की चट्टानें।

Scanned by CamScanner

इस संरचना में असम, राजस्थान एवं गुजरात के क्षेत्रों में खनिज तेल पाए जाते हैं।

क्वाटरनरी क्रम → इसके अंतर्गत गंगा और सिंधु का मैदान आता है। इसका निर्माण प्लीस्टोसीन काल में हुआ है। इसके अंतर्गत जलोढ़ मिट्टी आती है। पुरानी जलोढ़ मृदा को बांगर कहते हैं एवं नवीन जलोढ़ मृदा खादर कहलाती है।

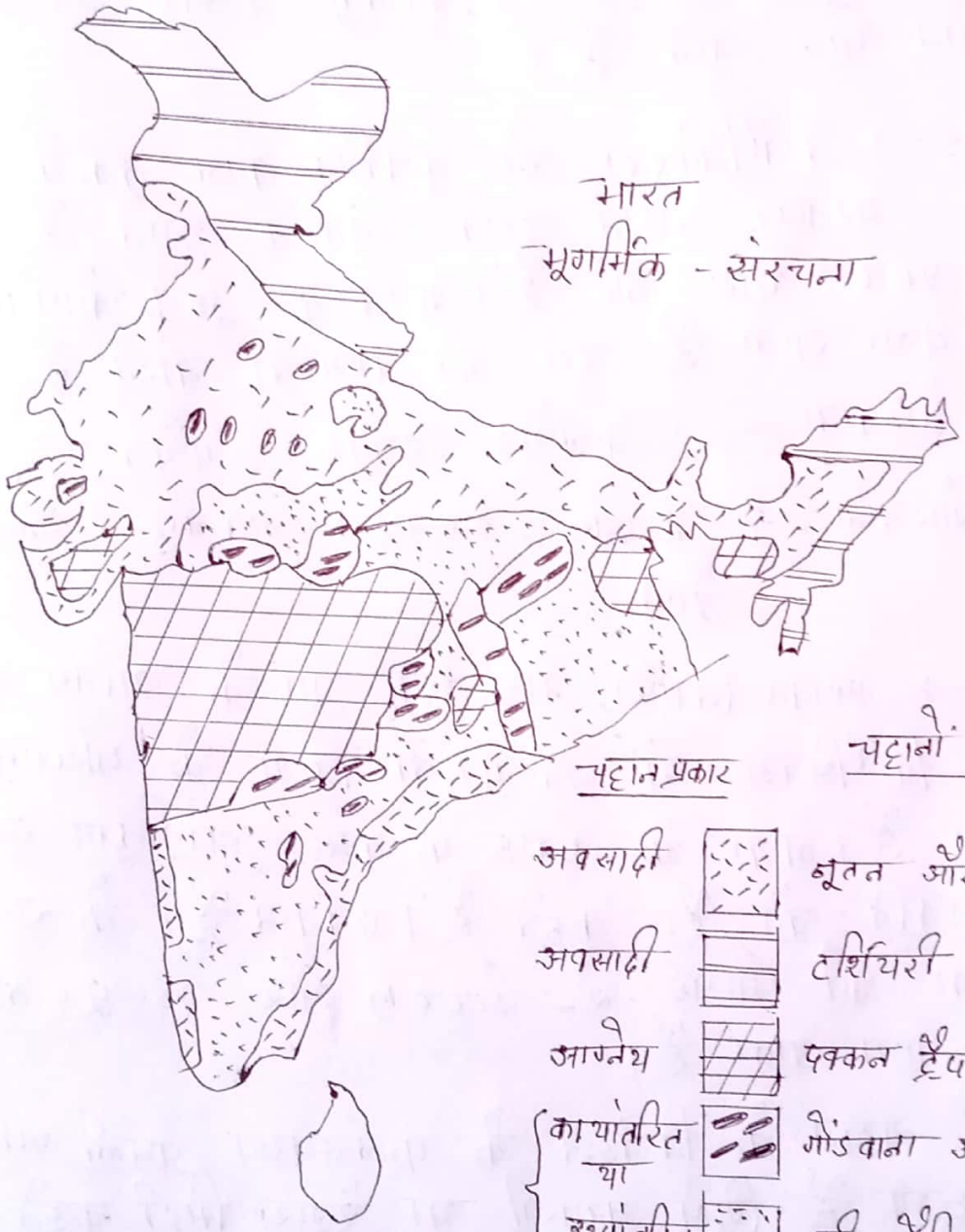

Scanned by CamScanner

Note :— भूगर्भिक संरचना को समझने के लिए भूगर्भिक समय - सारणी का ज्ञान अति - आवश्यक है।

कल्प	युग	युगांतर
N नियोजोइक	Q क्वाटरनरी	H होलोसीन P प्लीस्टोसीन
C सिनोजोइक	T टर्शियरी	P प्लायोसीन M मायोसीन O ओलिगोसीन E इयोसीन
M मेसोजोइक	S सेकेण्डरी	C क्रीटेशियस J जुरासिक T ट्रियासिक
P पेलियोजोइक	P प्राइमरी	P पर्मियन C कार्बोनिफेरस D डेवोनियन S सिल्यूरियन O ओर्डोविसियन C कैम्ब्रियन
P प्री-पेलियोजोईक A एथोजोइक		P प्री कैम्ब्रियन A आर्कियन

नयी युग की चट्टानें

बढ़ता क्रम

पुरानी चट्टानें

Scanned by CamScanner